Seventeenth Loksabha

an>

Title : Need to take steps to develop and conserve Santhali language script in the country.

श्री खगेन मुर्मु (माल्दहा उत्तर): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं एक अति गंभीर विषय को इस सदन में उठाना चाहता हूँ ।

वाजपेयी जी का सम्पूर्ण संथाल समाज आज भी शुक्रगुजार है । उस समय 22 दिसम्बर, 2003 में प्रधान मंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी जी के शासनकाल में संथाली भाषा को मान्यता मिली । आज आपके माध्यम से मैं सम्पूर्ण संथाल समाज की तरफ से उनको विनम्रतापूर्वक याद करते हुए बधाई देता हूँ ।

विश्व की सबसे पुरानी भाषा संथाली के संरक्षण और विकास के विषय पर इस सदन में बोलने की अनुमति प्रदान करने के लिए सर्वप्रथम मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ । किसी भी सभ्यता और संस्कृति के विकास के लिए उसकी अपनी भाषा का होना अनिवार्य है । सभ्यता के विकास के क्रम में आदिकालीन युग में जब संवाद सम्प्रेषण के लिए भाषा अपेक्षित विकास नहीं कर पाई, आज भी आदिवासी समाज में अधिकांशत: यही भाषा बोली जाती है । पूरे देश में लगभग 76 लाख लोगों द्वारा बिहार, बंगाल, असम, झारखंड, त्रिपुरा के अलावा बांग्लादेश और नेपाल में भी बोली जाने वाली इस भाषा के विकास की आवश्यकता है । यह संविधान की 22 भाषाओं में से एक है और आदिवासी स्वाभिमान से जुड़ी हुई है । किसी भी भाषा के लिए उसकी लिपि का होना अनिवार्य है । इस संदर्भ में मैं बताना चाहता हूँ कि संथाली भाषा की लिपि ओलचिकी है, जिसके जनक स्व. पं. रघुनाथ मुर्मू जी हैं ।

माननीय अध्यक्ष: आप घड़ी देख लें, आपके बोलने का समय पूरा हो गया ।

कुँवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल को श्री खगेन मुर्मू द्वारा उठाये गये विषय से संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है ।